Analysis: A Peer Review Research Journal of Language and Human Development (JLHD)

https://www.talentpublication.info/ Issue:3/Volume: 1/2025 ISSN:2583-9985

Dvinadtsat (The Twelve)
Poet: Alexander Blok

Translator: Chamandeep Pallav
Email: pallavchamandeep@gmail.com

The following is an introduction to the poem titled Dvinadtsat (The Twelve), written by the famous Russian poet Alexander Blok.

Alexander Blok (1880 – 1921) is considered one of the most prominent Russian poets and a leading representative of the Symbolist literary movement. He is regarded as one of the most influential poets of the Russian Revolution era. Blok's writings were deeply inspired by social change, historical events, and the psychological depths of human nature. He skillfully balanced the richness of Russian cultural tradition with modern sensibilities. His works are emotionally intense, politically charged, and philosophically profound.

Alexander Blok depicted the turmoil of revolution, the decay of society, and personal suffering in a highly symbolic style. His poetry is known for vivid imagery, sharp emotion, and a touch of irony. He is considered a pioneer of Russian Symbolism and is often seen as a poetic voice of the revolution.

The poem "Dvinadtsat" (The Twelve) was written in January 1918. It presents a symbolic and intense depiction of the Russian Revolution, focusing on social, political, and personal turmoil. The poem describes twelve anonymous revolutionaries marching through a snowy storm, symbolising the chaotic energy, violence, and suffering of the revolutionary time. It captures both the madness and the tragic human cost of revolution.

"Dvinadtsat" is deeply analysed for its psychological and historical layers and remains an invaluable part of Russian literary heritage, symbolising the dark yet transformative spirit of the era.

1

काली संध्या।
सफेद बर्फ।
हवा, हवा!
इंसान खड़ा नहीं हो सकता।
हवा, हवा —
सारी कायनात में बहती!

बर्फीली हवा
बिखेरती है सफेद बूँदें।
बर्फ के नीचे — बर्फ की परत।
फिसलन, भारीपन।
हर चलने वाला
फिसलता — अह, बेचारा!

इमारत से इमारत तक
खींचा गया एक रस्सा।
रस्से पर लटकता है एक बैनर:

"सारी सत्ता संविधान सभा को!"

एक बुजुर्ग महिला व्यथित हो रही है — रो रही है,
वो समझ नहीं पाती कि इसका क्या अर्थ है,
क्यों ऐसा विशाल टुकड़ा कपड़े पर लिखा है?
कितने बच्चों के लिए मोज़े बन सकते थे,
पर हर कोई — बेपहन, बेजूता...

बुजुर्ग महिला, जैसे कोई मुर्गी,
अलसाई तरह से बर्फ में लिपटी।
— ओ, माता-पिता की शरण!
— ओ, बॉल्शेविक हमें कब्र में ले जाएंगे!

हवा बर्फीली, काटने वाली।
ठंड पीछे नहीं रहती।
और यह बुर्जुआ, चौराहे पर,
अपनी गर्दन में दुपट्टा लपेटे।

और यह कौन? — लंबे बाल
धीमे स्वर में कहता है:
— देशद्रोही!
— रूस तबाह हो गई!

निश्चित ही यह कोई लेखक है —
वाग्मि।

और वहां, लंबा चिथड़ा
सिर झुका कर बर्फ के पार...

आजकल कैसा उदास,
साथी पुरोहित?
याद है कैसे वह पेट को आगे करके
चला करता था,
और लोगों पर चमकता था
उसका पेट का क्रॉस?

वह बड़ी बारिन्या कराकुल में
दूसरे से टकराई:
— हमने तो बहुत रोया था...
फिसल कर गिर पड़ी!

आह, आह!
खींचो, उठाओ!

हवा चंचल,
गुस्सैल और प्रसन्न,
पैंट की तहें उड़ाती,
आगंतुकों को बहाकर ले जाती,
बड़ा बैनर फड़फड़ाता:
"सारी सत्ता संविधान सभा को!"

और शब्द सुनाता है:
...हमारा भी एक सभा था...
...यही इमारत में...
...विचार-विमर्श हुआ —
निर्णय लिया:
वक्त के हिसाब से — दस, रात के हिसाब से —
पच्चीस...
...और कम नहीं लेना किसी से...
...चलो सोते हैं...

रात ढलती जा रही।
सड़क सुनसान होती जा रही।
एक भिखारी
झुका हुआ चलता है,
और हवा सीटी बजाती...

अरे, दीन!
आओ —
चुंबन लें...
रोटी दो!

आगे क्या?
आओ, चलो।

काला, काला आकाश।
क्रोध, विषाद से भरा क्रोध
उबल रहा है सीने में...
काला क्रोध, पवित्र क्रोध...

साथी!
आंखें खोलकर देखो।

2

हवा चल रही है, बर्फ पिघलती है।
बारह लोग चल रहे हैं।
राइफल की काली पट्टियाँ।
चारों ओर — रोशनी, रोशनी, रोशनी...

मुँह में सिगार, दबा हुआ टोपी,
पीठ पर बर्बन का ताश का ताशा होना चाहिए!
स्वतंत्रता, स्वतंत्रता,
ओह, ओह, बिना क्रॉस के!
त्रा-ता-ता!

ठंड लग रही है, साथी, बहुत ठंड!
— और वान्का व कातका पब में...
— उसके मोजे में केरेन्का है!
— अब वान्यूष्का खुद अमीर हो गया...
— पहले वान्का हमारा था, अब वह सैनिक बन गया!

— अरे, वान्का, बेवकूफ बुर्जुआ,
मेरे ऊपर हाथ लगाने की हिम्मत कर!
स्वतंत्रता, स्वतंत्रता,
ओह, ओह, बिना क्रॉस के!

कातका और वान्का व्यस्त हैं —
किसमें व्यस्त हैं?..
त्रा-ता-ता!

चारों ओर — रोशनी, रोशनी, रोशनी...
कंधों पर — राइफल की पट्टियाँ...
क्रांति का कदम बढ़ाते जाओ!
अडिग दुश्मन कभी नहीं सोता!

साथी, राइफल थामो, डरना मत!
आओ गोली चलाएं पवित्र रूस पर —
उस पुराने ढर्रे की,
उस झोपड़ी की,
उस मोटी पिछवाड़े वाली!

ओह, ओह, बिना क्रॉस के!

3

कैसे गए हमारे साथी
लाल गार्ड में सेवा देने —
लाल गार्ड में सेवा देने —
बेपरवाह सिर न्योछावर करने!

अरे, यह कैसा कड़वा-कड़वा दुःख,
और फिर भी मीठा जीवन!

फटे-पुराने कोट की लहरें,
ऑस्ट्रियाई राइफल की गूँज!

हम सभी बुर्जुआ पर
विश्वव्यापी आग लगा देंगे,
विश्वव्यापी आग खून में भरे —
हे प्रभु, आशीर्वाद दो!

4

बर्फ घूमती है, नटखट पागल चिल्लाता है,
वान्का कातका के साथ उड़ता जा रहा है —
इलेक्ट्रिक लालटेन
साँझे गाड़ी की लकड़ियों पर झूल रहा है...

आह, आह, गिर पड़े!..

वह सैनिक कोट में,
मूर्ख सी मूंछ के साथ,
घुमाता जा रहा है,
घुमाता है,
मजाक करता है...

ऐसा वान्का — तो कंधे बड़ा है!
ऐसा वान्का — तो बातों का फव्वारा है!

वह कातका बेवकूफी को गले लगाता है,
बातों से बहलाता है...

कातका चेहरे को ऊपर करके झुक गई,
मोतियों की तरह दांत चमक रहे हैं...

ओ कात्या, मेरी कात्या,
मोटी-मुँहवाली मेरी कात्या...

5

कात्या, तेरी गर्दन पर
छुरी से बना घाव आज भी भरा नहीं।
तेरी छाती के नीचे, कात्या,
वह खरोंच अभी भी ताजा है!

ओह, ओह, थोड़ा नाच!
तेरे सुंदर पैर तो पीड़ित हैं!

तू फीते की अन्दरुनी चादर में चलती थी —
चल तो, चल...
तू अफसरों के साथ प्रेम करती थी —
प्रेम कर तो, प्रेम कर...

ओह, ओह, प्रेम कर!

दिल की धड़कन ने जोर से एक छलांग लगाई!

याद है, कात्या, अफसर —
वह छुरी से बच नहीं सका...

क्या तू नहीं याद कर रही, ये अभिशाप?
या तेरी याददाश्त इतनी फीकी हो गई?

ओह, ओह, याद ताज़ा कर,
इसे अपने पास बिठा ले,
नींद के साथ ले चल...

ग्रे मोजे पहनती थी,

चॉकलेट मिंयॉ खाती थी,
यंकर्स के साथ घूमती थी —
अब तो सैनिक के साथ चली गई?

ओह, ओह, पाप कर!
तेरी आत्मा को थोड़ा सुकून मिलेगा!

6

...फिर से तेज़ी से दौड़ता चला आता है,
चिल्लाता है, चीखता है, पागल की तरह हंगामा
मचाता है...

रुको, रुको! अंद्रुहा, मदद कर!
पेत्रुहा, पीछे से दौड़कर आ जा!..

धुक-धुक-धुक-धुक-धुक-धुक!
बर्फ का धुआं आकाश की ओर उठता है!..

पागल की तरह भागता वान्का के साथ...
एक बार और! ट्रिगर दबाओ!..

धुक-धुक-धुक!
तुम समझ जाओगे,
...कैसे पराई लड़की के साथ मस्ती करनी है!..

भाग गया, निकम्मा! रुक जा,
कल मैं तेरी सजा दूँगा!

और कात्या कहाँ? — मरी हुई, मरी हुई!
गोली लगी सिर पर!

क्या कात्या खुश है? — एक शब्द नहीं...
तू वहीं पड़ी रह, बेचैनी, बर्फ पर...

क्रांति का कदम बढ़ाते चलो!
अडिग दुश्मन कभी नहीं सोता!

7

और फिर वे बारह फिर चलते हैं,
कंधों पर राइफल लटकाए।

सिर्फ उस गरीब हत्यारे का
चेहरा छुपा हुआ है, बिल्कुल दिखता नहीं...

चाल दिन-ब-दिन तेज होती जा रही है।
गर्दन में मफलर लपेट लिया —
कहीं संभल नहीं पा रहा...

— क्या हुआ, साथी, तुम खुश नहीं?
— क्या दोस्त, चकरा गए?
— पेत्रुहा, मुँह नीचे क्यों कर रखा है,
या कात्या के लिए पछता रहे हो?

— ओह, प्यारे साथियों,
उस लड़की से मैं बहुत प्यार करता था...

काले-नीले, नशे की रातें
उस लड़की के साथ बिताई थीं...

— उसके जलते हुए नयनों की वजह से,
उस लाल तिल की वजह से
दाहिने कंधे के पास,
मैंने उसे नष्ट कर दिया, बेवकूफ,
मैंने बेवकूफी में उसे नष्ट कर दिया... आह!

— देखो, हरामी, खेल-तमाशा शुरू कर दिया,
क्या तुम, पेत्रुहा, महिला हो गए?

— हाँ, शायद अपनी आत्मा उल्टा पलट देने का
ख्याल आया...
जाओ, मनचाहा करो!

— अपनी शान संभालो!
— अपने ऊपर नियंत्रण रखो!

— आज का समय ऐसा नहीं
कि तेरी तरह की बेवकूफी पर ध्यान दिया जाए।

— यह बोझ हमारे लिए भारी होगा,
प्रिय साथी!

— पेत्रुहा अपने चलने की तेज़ी घटा देता है...
वह सिर ऊपर उठाता है,
फिर से थोड़ा हंसता है...

ओह, ओह!
थोड़ा मजा लेना कोई पाप नहीं!

मंजिलें बंद करो,
आज डकैती होगी!

भवन के तहखाने खोलो —
आज बेघर लोगों का धमाल है!

8

ओह, यह कैसा कड़वा-कड़वा दुःख!
बोरियत की बोरियत,
मौत सी नीरसता!

अब तो बस समय बिताऊँगा, बिताऊँगा...
अपने माथे को खुजलाऊँगा, खुजलाऊँगा...
बीजों को छीलूंगा, छीलूंगा...
चाकू से अपनी रेखाएँ काटूंगा, काटूंगा!..

उड़ जा, बुर्जुआ, छोटे गौरैया की तरह!

मैं पी लूंगा तुझसे खून
उसके लिए, जो दिल में बसी थी,
काली भौंह वाली उसकी याद में...

हे प्रभु, शरण दो उस आत्मा को,
तेरी दासी की...

कितनी बोरियत है!

9

शहर की हलचल का कोई शोर नहीं सुनाई देता,
नवका टावर के ऊपर छाई सन्नाटा है।
और अब कोई पुलिसवाला भी नहीं —
जाओ, दोस्तों, बिना शराब के मस्ती करो!

एक बुर्जुआ चौराहे पर खड़ा है,
अपनी नाक को कोट की कॉलर में छुपाए।

और उसके पास एक बुरा कुत्ता
अपनी खुरदरी फर में दुबका हुआ,
पूंछ को कस कर भीतर समेटे।

बुर्जुआ खड़ा है, जैसे कोई भूखा कुत्ता,
बिल्कुल मौन, जैसे कोई सवाल।

और पुराना समाज,
जैसे बिन जाति का कुत्ता,
उसके पीछे खड़ा है,
पूंछ दबाए।

10

कोई बर्फीली आंधी छिड़ गई,
ओह, आंधी, ओह, आंधी!

एक-दूसरे को देख पाना मुश्किल है
चार कदम की दूरी पर ही...

बर्फ भंवर बनकर घूम रही है,
बर्फ की एक बड़ी चोटी उठ रही है...

— ओह, यह कैसी बर्फीली मार है, हे भगवान!
— पेत्रुहा! अरे, और उलझ मत!

तुझे बचाने वाला कौन था,
वो सुनहरा आइकनोस्टास?

तू बेहोश सा है, सचमुच,
थोड़ा समझ, थोड़ा सोच सही...

क्या तेरे हाथ खून से रंगे नहीं हैं
कात्या के प्रेम के चलते?

— क्रांति की चाल बनाए रखो!
वो अनथक दुश्मन बेहद करीब है!

आगे बढ़ो, आगे बढ़ो, आगे बढ़ो,
हे श्रमिक जनता!

11

...और वे बिना किसी पवित्र नाम के
सभी बारह चलते जा रहे हैं — अनंत की ओर।

हर चुनौती के लिए तैयार,
कुछ भी गंवाने को तैयार नहीं...

उनकी स्टील की राइफलें
अदृश्य दुश्मन की ओर तनी हुई...

सूने गलियों में,
जहाँ बर्फीली आंधी ही दौड़ती है...

और बर्फीले टीले इतने ऊँचे कि
जूते तक डूब जाते हैं...

उनके समक्ष झूमता है
लाल झंडा।

उनके कदमों की
समयबद्ध गूँज।

देखो — वह क्रूर दुश्मन जागने वाला है...

और आंधी उनके चेहरे पर चलती है,
दिन रात
बिना रुके...

आगे बढ़ो, आगे बढ़ो,
हे श्रमिक जनता!

12

दबंग कदमों से वे आगे बढ़ते जा रहे हैं...
— और कौन है वहाँ? बाहर आओ!

यह तो वह हवा है,
लाल झंडे के साथ,

जो आगे मची हुई है...

आगे है एक ठंडी बर्फीली टीला,
— कौन है उस टीले में — बाहर आओ!..

सिर्फ एक भूखा गरीब कुत्ता
पीछे हिचकोले खाता चल रहा है...

— छूट जा, मरे हुए फर वाला,
तेरी पीठ को मैं खंजर से चिढ़ाऊंगा!

पुराना समाज,
जैसे कोई बदसूरत कुत्ता,
गायब हो जा — मैं तो तुझे पीट डालूंगा!..

...दांत निकालकर भयंकर भूखा भेड़िया दिखता है
—
पूंछ दबाए — पीछे नहीं हटता —
कोहरा, बेरोजगार कुत्ता,
कुत्ता बिना वंश...

— ए, बता कौन आ रहा है?
— कौन लाल झंडा लहरा रहा है?

— गौर से देखो — कितना अंधेरा है!
— कौन तेज कदमों से चल रहा है,
हर घर के पीछे छुपते हुए?

— पर कोई बात नहीं, मैं तुझे पकड़ लूंगा,
बेहतर होगा, सीधे मुझसे आत्मसमर्पण कर ले!

— ए, साथी, बुरा होगा,
बाहर आ जा, नहीं तो गोली चला देंगे!

धुक-धुक-धुक! —
सिर्फ इको ही घरों में गूंजता है...

सिर्फ बर्फीली आंधी
लंबे, विक्षिप्त हँसी में बर्फ के टीलों में गूंजती है...

धुक-धुक-धुक!
धुक-धुक-धुक...

...ऐसे ही वे आगे बढ़ते हैं,
पीछे — भूखा कुत्ता,
आगे — खून से सना झंडा,

और आंधी के पीछे, अदृश्य,
गोली से अछूता,
कोमल, बर्फीली चाल से,
मोतियों की बर्फीली छितरपट्टी में,
सफेद गुलाबों की माला में —

आगे बढ़ता है — ईसा मसीह।

जनवरी 1918